एकता का संदेश ही संविधान की आत्मा: राज्यपाल 13-4-2107

भारतीय संविधान में समाहित है देश का प्रतिबिंब, अनेकता में एकता हमारी पहचान
एकवचन एवं भौतिकवादी संस्कृति भारतीय संस्कृति नहीं
एसआरएम यूनिवर्सिटी में आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार का हुआ समापन
संविधान निर्माताओं की दृष्टि में भारत की संकल्पना विषय पर हुआ आयोजन

राई (सोनीपत), 13 अप्रैल। हरियाणा के राज्यपाल प्रो. कप्तान सिंह सोलंकी ने संविधान निर्माता बाबा साहेब डा. बी.आर. अंबेडकर की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें नमन करते हुए कहा कि देश की मजबूत एकता ही भारतीय संविधान की आत्मा है। विविधता एवं अनेकता में एकता ही हमारी पहचान है। ऐसी अनूठी संस्कृति के कारण ही हिंदुस्तान को विश्व में एक अलग पहचान मिली है।

राज्यपाल प्रो. कप्तान सिंह सोलंकी गुरुवार को एसआरएम यूनिवर्सिटी में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार के समापन समारोह में उपस्थित श्रोताओं को मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित कर रहे थे। संविधान निर्माताओं की दृष्टि में भारत की संकल्पना विषय के चयन के लिए प्रो. सोलंकी ने आयोजकों को बधाई देते हुए कहा कि यह विषय भारत के लिए अति महत्वपूर्ण रहा है। 21वीं सदी में इसका महत्व और बढ़ गया है। इसलिए इस विषय पर चर्चा जरूरी है। चर्चा, निष्कर्ष निकालाना एवं अपनाना प्रजातंत्र की पहचान है। तानाशाही शासन में केवल एक व्यक्ति सोचता है जिसे सबको मानना होता है किंतु लोकतंत्र में सबके विचार-विमर्श से निष्कर्ष निकाला जाता है। प्रजातंत्र के चलते ही डा. अंबेडकर को न चाहते हुए भी धारा-370 का समर्थन करना पड़ा था चूंकि डा. अंबेडकर धारा-370 के पक्ष में नहीं थे और उन्होंने कहा था कि इसकी वजह से देश की एकता को ठेस पहुंच सकती है लेकिन प्रजातंत्र में बहुमत सर्वोपरि होता है।

विषय पर आगे बढ़ते हुए राज्यपाल ने कहा कि संविधान निर्माताओं की नजर में भारत की संकल्पना उसी प्रकार से है जिस कंसेप्ट के साथ कुलाधिपति रवि पच्चामुत्थू ने एसआरएम विश्वविद्यालय की स्थापना चेन्नई से हरियाणा में की है और बीच में बनारस तथा सिक्किम में भी एसआरएम स्थापित किया गया है। उन्होंने कहा कि कल्पना करें कि हजारों वर्षों की गुलामी के बाद आजादी मिलने पर भारत की पुर्नस्थाना किस प्रकार से की गई होगी। गुलामी के दौर में भारत को मिटाने की पूरी कोशिश की गई किंतु कोई मिटा नहीं सका। इसका कारण यहां की अनूठी संस्कृति है। भारत को हिंदुस्तान कहें तो दिल को छूता है किंतु इंडिया दिमाग में ही अटककर रह जाता है। इसी प्रकार से मदर व माँ तथा लेडी व बहन जी के संबोधन में

अंतर है। संस्कृति पर किये गये ऐसे प्रहारों को गंभीरता से समझने की आवश्यकता है। वर्ष 1893 में स्वामी विवेकानंद ने शिकागो में जब भाषण दिया तो उन्होंने ब्रदर्स एंड सिस्टर्स ऑफ अमेरिका के संबोधन से शुरुआत की जो वहां के लीडिंग पेपरों की हैडलाइन बना। भारतीय संस्कृति एकवचन व भौतिकतावाद से परे है। यहां तो जानवर में भी ईश का अंश देखा जाता है।

प्रो. कप्तान सिंह सोलंकी ने कहा कि भारत एक ऐसा राष्ट्र है जिसमें पूरा विश्व समाया हुआ है। जिस प्रकार से शरीर के सभी अंग एकसमान नहीं होते उसी तरह से हिंदुस्तान में विभिन्नता समाई है। किंतु यह विभिन्नता एवं विविधता नकारात्मक रूप में नहीं है। भारत एक है। इसके संविधान में समानता, बंधुत्व तथा स्वतंत्रता है जो प्रत्येक जन के लिए है, जिसमें देश का प्रतिबिंब समाहित है।

इस मौके पर एसआरएम यूनिवर्सिटी के कुलाधिपति रवि पच्चामुत्थू व कुलपति डा. एस राजाराजन, गुरु जंभेश्वर यूनिवर्सिटी एवं दीनबंधु छोटूराम विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार, भक्त फूल सिंह महिला विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. आशा कादयान, कुलसचिव डा. मनीष भल्ला, अतिरिक्त उपायुक्त शिवप्रसाद शर्मा, डा. सुभीता ढ़ाका, डा. अशोक के. कांटरू, डा. पूर्णमल गौड़, जवाहरलाल कौल, एसोसिएट प्रोफेसर दीपशिखा, प्राध्यापिका राशि मलिक, पीआरओ अजीत सिन्हा आदि मौजूद थे।

अटल बिहारी वाजपेयी की कविता को जोड़ा सेमिनार के विषय से:

राज्यपाल प्रो. कप्तान सिंह सोलंकी ने अपने संबोधन के दौरान पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की कविता को सेमिनार क विषय से जोड़ते हुए एकता के संदेश को प्रसारित किया। प्रो. सोलंकी ने कहा कि अटल ने अपनी कविता में हिमालय को भारत के मस्तक की संज्ञा दी है तथा कश्मीर को उसका ताज बताया है। संविधान में कश्मीर को इस नजर से ही देखा गया है। अटल ने पंजाब-बंगाल को भुजाओं के रूप में देखा है तो नर्मदा को कर्दनी (तागड़ी) की संज्ञा दी है। पश्चिमी घाट व पूर्वी घाट को विशाल जंघाओं के रूप में देखते हुए भारत को ऐसा देश बताया है जिसके पैरों को समुद्र धोता है तथा सूरज व चांद उसकी आरती उतारते हैं। यहां की बूंद-बूंद गंगाजल और कण-कण रत्न समान है। ऐसे देश के लिए ही जीने-मरने का संकल्प लिया है।

29 युवा 29 राज्यों में देंगे एकता का संदेश:

राज्यपाल प्रो. कप्तान सिंह सोलंकी ने कहा कि आज राजभवन में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसके कारण उन्हें कार्यक्रम में पहुंचने में थोड़ा विलंब हुआ। उन्होंने कहा कि राजभवन में 29 युवा एकत्रित हुए जो अलग-अलग 29 राज्यों में जायेंगे और देश की एकता एवं अखंडता का संदेश प्रसारित करेंगे। इन युवाओं को शुभकामनाओं के साथ रवाना करने के उपरांत वे इस कार्यक्रम में शामिल हुए हैं।

SRM
JKSC

SRM